सं 11011/08/2026- रा.भा(अनुसंधान)
भारत सरकार
गृह मंत्रालय
राजभाषा विभाग
*****

बी विंग, चतुर्थ तल, एन.डी.सी.सी-2 भवन
जय सिंह रोड, नई दिल्ली – 110001
दिनांक: 27.05.2026

कार्यालय ज्ञापन

विषय: आध्यात्मिक पुस्तक 'शिव-अनादि हैं, अनंत हैं' के लिए विषय-वस्तु/आलेख आमंत्रित किए जाने के संबंध में।

अमृतकाल का वर्तमान दौर 'विकास भी, विरासत भी' के मंत्र से प्रेरित होकर भारत की विशिष्ट सांस्कृतिक परंपराओं, गौरवशाली विरासत और सांस्कृतिक स्वाभिमान के नवोत्थान का साक्षी बन रहा है। राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय द्वारा भारतीय संस्कृति, साहित्य तथा लोक परंपराओं जैसे विविध विषयों पर समय-समय पर महत्वपूर्ण पुस्तकों का प्रकाशन किया जाता रहा है।

2. इसी क्रम में, राजभाषा विभाग द्वारा 'शिव' के विविध आयामों पर आधारित एक विशेष पुस्तक **'शिव-अनादि हैं, अनंत हैं'** का प्रकाशन किया जा रहा है। 'शिव' केवल आस्था के केंद्र नहीं, बल्कि भारतीय सांस्कृतिक चेतना और आध्यात्मिक परंपरा के प्रतीक हैं। भारतीय संस्कृति, दर्शन, साहित्य, कला, संगीत, नृत्य, लोकपरंपराओं और अध्यात्म में 'शिव' की महत्ता अत्यंत व्यापक एवं गहन रही है। वेदों से लेकर पुराणों तक, उपनिषदों से लेकर लोकगाथाओं तक तथा भारत से लेकर विश्व के अनेक देशों तक 'शिव' का स्वरूप विविध रूपों में अभिव्यक्त होता रहा है।

3. प्रस्तावित पुस्तक के लिए आम जन, विद्वान, शोधार्थी, साहित्यकार, शिक्षक, अध्यात्म एवं संस्कृति के अध्येतागण से निम्नलिखित विषयों पर हिंदी में मौलिक आलेख आमंत्रित किए जाते हैं :

i. शिव का अनादि एवं अनंत स्वरूप
ii. शिव के विविध रूप- नटराज, अर्धनारीश्वर, महाकाल, भोलेनाथ, पशुपतिनाथ आदि
iii. शिव और उनके गण : विविधता में एकता और सामाजिक न्याय
iv. भारतीय संस्कृति, लोकजीवन एवं दर्शन में शिव
v. श्री सोमनाथ मंदिर: भारत की सांस्कृतिक चेतना और सभ्यतागत शक्ति का प्रतीक
vi. आदियोगी शिव और योग, ध्यान एवं अध्यात्म
vii. शिव तांडव एवं भारतीय नृत्य परंपरा
viii. शिव एवं भारतीय संगीत परंपरा
ix. कैलाश मानसरोवर एवं ज्योतिर्लिंगों का धार्मिक और सांस्कृतिक महत्व
x. भारत के विभिन्न राज्यों में शिव उपासना की परंपराएँ
xi. विश्व के विभिन्न देशों में शिव स्तुति एवं शिव परंपरा
xii. अर्धनारीश्वर और स्त्री-पुरुष समभाव का दर्शन
xiii. आधुनिक समाज में शिव दर्शन की प्रासंगिकता
xiv. युवा पीढ़ी और शिव चेतना
xv. महाशिवरात्रि एवं अन्य शिव पर्वों का महत्व

4. लेख यूनिकोड समर्थित किसी फॉन्ट में टंकित, पूर्णतः मौलिक, व्याकरणिक दृष्टि से सही तथा अधिकतम 3000 शब्दों का होना चाहिए। शोध से संबंधित लेखों में शब्द सीमा 5000 तक हो सकती है। पुस्तक में प्रकाशनार्थ विषय-वस्तु के स्रोत, संदर्भ/उद्धरण दिए जाने अपेक्षित हैं। लेख के साथ 'शिव' से संबंधित उच्च गुणवत्ता (High Resolution) के चित्र/रेखाचित्र (Sketch) भी भेजे जा सकते हैं। पुस्तक की सामग्री के चयन के संबंध में अंतिम निर्णय राजभाषा विभाग का होगा। अपेक्षित विषय-वस्तु (मौलिक आलेख, चित्र/रेखाचित्र, लेखक का फोटो एवं संक्षिप्त परिचय) दिनांक 15.06.2026 तक ई-मेल द्वारा satendra.dahiya@nic.in पर प्रेषित की जा सकती है।

(राजेश कुमार श्रीवास्तव)
संयुक्त निदेशक (अनुसंधान)

प्रतिलिपि:

1) भारत सरकार के सभी मंत्रालयों एवं विभागों को इस अनुरोध के साथ कि कृपया इसे सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों की जानकारी में लाएं।
2) एन आई सी अनुभाग, राजभाषा विभाग को इस अनुरोध के साथ कि कृपया इसे राजभाषा विभाग की वेबसाइट पर अपलोड करा दें।